● **पढ़ो, समझो और लिखो :**

४. शब्द संपदा

– डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे

जन्म : ७ अगस्त १९४२, गुलबर्गा (कर्नाटक) **रचनाएँ :** लगभग ६५ पुस्तकें – अनुवाद का समाज शास्त्र तथा हिंदी कथा साहित्य और देश विभाजन उल्लेखनीय हैं । **परिचय :** डॉ. रणसुभे जी मराठी भाषी हिंदी लेखक, प्राध्यापक, अनुवादक, समीक्षक के रूप में जाने जाते हैं।

प्रस्तुत निबंध के माध्यम से लेखक ने शब्दों की शक्ति को दिखाते हुए इनकी संपदा को बढ़ाने के लिए जागरूक किया है ।

स्वयं अध्ययन

वाणी कैसी होनी चाहिए, बताओ ।

------- ------- ------- ------- -------

आदिम अवस्था से आधुनिक मनुष्य तक की विकास यात्रा का रहस्य किसमें है, क्या इसका तुम्हें पता है? अधिकांश लोग इसका उत्तर देते हैं कि अन्य प्राणियों की तुलना में मनुष्य का विकसित मस्तिष्क इस पूरी प्रगति व संस्कृति के मूल में है । यह उत्तर अपूर्ण है। पूर्ण उत्तर यह है कि मनुष्य की प्रगति हुई, वह इसलिए कि इस मस्तिष्क ने भाषा की खोज की । भाषा ही सभी प्रगति की जड़ में है । दुनिया की सभी ज्ञानशाखाओं का विकास हुआ– भाषा के कारण । 'भाषा' का अर्थ है–सार्थक शब्दों का व्यवस्थित–क्रमबद्ध संयोजन ।

शब्दों का यह संसार बड़ा विचित्र है । शब्दों की ताकत की ओर हमारा ध्यान कभी नहीं जाता । शब्द ही मनुष्य को ज्ञान से जोड़ते हैं । शब्द ही मनुष्य को मनुष्य से जोड़ते हैं और शब्द ही मनुष्य को मनुष्य से तोड़ते हैं । विज्ञान की दृष्टि से तो अक्षर ध्वनि के चिह्न हैं, निर्जीव हैं । मनुष्य ही उन्हें अर्थ देता है, जीवंत बनाता है । जब शब्द जीवंत हो जाते हैं तो फिर उनमें मनुष्य के विविध स्वभाव, गुण आने लगते हैं । मनुष्य स्वभाव के जितने विभिन्न नमूने हैं, उतने ही शब्दों के स्वभाव के नमूने हैं । जैसे कुछ लोग औरों को हँसाने का काम करते हैं, वैसे ही कुछ शब्द भी लोगों को हँसाते हैं । जैसे कुछ मनुष्य औरों को हमेशा तकलीफ देते हैं; वैसे कुछ शब्दों के उच्चारण मात्र से सामनेवाला व्यक्ति व्यथित हो जाता है ।

कई बार तो ऐसे शब्दों को सुनकर वह रोने भी लगता है । कुछ लोग बड़े प्रिय होते हैं; वैसे ही कुछ शब्द भी बहुत प्रिय होते हैं । उन्हें बार–बार सुनने की, गुनगुनाने की इच्छा होती है । एक ओर कुछ शब्द धोखा देने वाले होते हैं, कुछ निरर्थक होते हैं तो दूसरी ओर कुछ शब्द बहुत सज्जन, सात्त्विक, सभ्य और सुसंस्कृत होते हैं । कुछ शब्द निष्क्रिय बना देते हैं कि, 'कुछ मत करो जो भाग्य में है, वह तो मिल ही जाएगा । नहीं है,

❑ उचित आरोह–अवरोह के साथ निबंध का मुखर वाचन कराएँ । पाठ में आए प्रमुख मुद्दों पर प्रश्नोत्तर के माध्यम से चर्चा कराएँ । 'बातै हाथी पाइए, बातै हाथी पाँव' पर लेखन पूर्व चर्चा करवाकर दस वाक्य लिखने के लिए प्रेरित करें । विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करें ।

सुनो तो जरा

‘भारत के संविधान की उद्देशिका’ सुनो और दोहराओ ।

तो नहीं मिलेगा ।’ न्यूटन ने कहा है कि किसी भी काम की सफलता के लिए ९०% (नब्बे प्रतिशत) परिश्रम की, ५% (पाँच प्रतिशत) बुद्‌धि की और ५% (पाँच प्रतिशत) संयोग की जरूरत होती है । परंतु याद रखें, किसी भी काम को पूर्णत्व देने के लिए ९०% (नब्बे प्रतिशत) कठोर परिश्रम की जरूरत होती है । ऐसे शब्द, जो हमें निष्क्रिय करते रहते हैं; उन्हें हमें अपने जीवन व्यवहार से निकाल बाहर करना चाहिए ।

कुछ भाषाओं के शब्द किसी भी अन्य भाषा से मित्रता कर लेते हैं और उन्हीं में से एक बन जाते हैं । जैसे आपके मित्रों में से कुछ ऐसे हैं; जो सबसे घुलमिल सकते हैं । कुछ ऐसे होते हैं कि वे औरों से मित्रता नहीं कर पाते । शब्दों का भी ऐसा ही स्वभाव होता है; विशेषकर अंग्रेजी भाषा के कई शब्द जिस किसी प्रदेश में गए, वहाँ की भाषाओं में घुलमिल गए । जैसे– ‘बस, रेल, कार, रेडियो, स्टेशन’ आदि । कहा जाता है कि तमिळ भाषा के शब्द केवल अपने परिवार द्रविड़ परिवार तक ही सीमित रहते हैं । वे किसी से घुलना, मिलना नहीं चाहते । अलबत्ता हिंदी के शब्द मिलनसार हैं परंतु सब नहीं; कुछ शब्द तो अंत तक अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखते हैं । अपने मूल रूप में ही वे अन्य स्थानों पर जाते हैं । कुछ शब्द अन्य भाषा के साथ इस प्रकार जुड़ जाते हैं कि उनका स्वतंत्र रूप खत्म-सा हो जाता है ।

हिंदी में कुछ शब्द ऐसे भी पाए जाते हैं जो दो भिन्न भाषाओं के शब्दों के मेल से बने हैं । अब वे शब्द हिंदी के ही बने हैं । जैसे– हिंदी-संस्कृत से वर्षगाँठ, माँगपत्र; हिंदी-अरबी/फारसी से थानेदार, किताबघर; अंग्रेजी-संस्कृत से रेलयात्री, रेडियो तरंग;

अरबी/फारसी-अंग्रेजी से बीमा पॉलिसी आदि । इन शब्दों से हिंदी का भी शब्द संसार समृद्‌ध हुआ है । कुछ शब्द अपनी माँ के इतने लाड़ले होते हैं कि वे माँ-मातृभाषा को छोड़कर औरों के साथ जाते ही नहीं । कुछ शब्द बड़े बिंदास होते हैं, वे किसी भी भाषा में जाकर अपने लिए जगह बना ही लेते हैं ।

शब्दों के इस प्रकार बाहर जाने और अन्य अनेक भाषाओं के शब्दों के आने से हमारी भाषा समृद्‌ध होती है । विशेषतः वे शब्द जिनके लिए हमारे पास प्रतिशब्द नहीं होते । ऐसे हजारों शब्द जो अंग्रेजी, पुर्तगाली, अरबी, फारसी से आए हैं; उन्हें आने दीजिए । जैसे– ब्रश, रेल, पेंसिल, रेडियो, कार, स्कूटर, स्टेशन आदि । परंतु जिन शब्दों के लिए हमारे पास सुंदर शब्द हैं, उनके लिए अन्य भाषाओं के शब्दों का उपयोग नहीं होना चाहिए । हमारे पास ‘माँ’ के लिए, पिता के लिए सुंदर शब्द हैं, जैसे– माई, अम्मा, बाबा, अक्का, अण्णा, दादा, बापू आदि । अब उन्हें छोड़ मम्मी-डैडी कहना अपनी भाषा के सुंदर शब्दों को अपमानित करना है ।

- पाठ में आए हिंदीतर भाषा के शब्द खोजकर भाषानुसार उनका वर्गीकरण कराएँ । दैनिक बोलचाल में प्रयुक्त होने वाले अन्य भाषाओं के ज्ञात शब्दों की सूची बनाने के लिए विद्‌यार्थियों को प्रेरित करें । इन शब्दों के हिंदी समानार्थी शब्दों पर चर्चा करें और कराएँ । संचार माध्यमों (दूरदर्शन, भ्रमणध्वनि, अंतरजाल) में प्रयुक्त होने वाले अंग्रेजी और उनके हिंदी शब्दों की सूची बनवाएँ । हिंदी शब्दों के प्रयोग करने हेतु प्रेरित करें । भ्रमणध्वनि पर गूगल में कहानी पढ़ने के लिए कौन-कौन-सी प्रक्रिया करनी पड़ेगी, चर्चा करें ।

जरा सोचो .... चर्चा करो

यदि तुम पशु-पक्षियों की बोलियाँ समझ पाते तो ...

हमारे मुख से उच्चरित शब्द हमारे चरित्र, बुद्धिमत्ता, समझ और संस्कारों को दर्शाते हैं इसलिए शब्दों के उच्चारण के पूर्व हमें सोचना चाहिए । कम-से-कम शब्दों में अर्थपूर्ण बोलना और लिखना एक कला है । यह कला विविध पुस्तकों के वाचन से, परिश्रम से साध्य हो सकती है । मात्र एक गलत शब्द के उच्चारण से वर्षों की दोस्ती में दरार पड़ सकती हैं । अब किस समय, किसके सामने, किस प्रकार के शब्दों का प्रयोग करना चाहिए इसे अनुभव, मार्गदर्शन, वाचन और संस्कारों द्‌वारा ही सीखा जा सकता है । सुंदर, उपयुक्त और अर्थमय शब्दों से जो वाक्य परीक्षा में लिखे जाते हैं उस कारण ही अच्छी श्रेणी प्राप्त होती है । अनाप-शनाप शब्दों का प्रयोग हमेशा हानिकारक होता है ।

प्रत्येक व्यक्ति के पास स्वयं की शब्द संपदा होती है । इस शब्द संपदा को बढ़ाने के लिए साहित्य के वाचन की जरूरत होती है । शब्दों के विभिन्न अर्थों को जानने के लिए शब्दकोश की भी जरूरत होती है ।

शब्दकोश का एक पन्ना रोज एकाग्रता से पढ़ोगे तो शब्द संपदा की शक्ति का पता चल जाएगा ।

तो अब तय करो कि अपनी शब्द संपदा बढ़ानी है । इसके लिए वाचन-संस्कृति को बढ़ाओ । पढ़ना शुरू करो । तुम भी शब्द संपदा के मालिक हो जाओगे ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

तकलीफ = परेशानी

निष्क्रिय = कृतिहीन

मिलनसार = मिल-जुलकर रहनेवाले

मुहावरे

दरार पड़ना = दूरी बढ़ना

अनाप-शनाप बोलना = निरर्थक बातें करना

विचार मंथन

।। कथनी मीठी खाँड़-सी ।।

सदैव ध्यान में रखो

शब्दों का प्रयोग सावधानी से करना चाहिए ।

खोजबीन

हजारी प्रसाद द्विवेदी की 'कबीर ग्रंथावली' से पाँच दोहे ढूँढ़कर सुंदर अक्षरों में लिखो ।

अध्ययन कौशल

जानकारी प्राप्त करने के विविध संदर्भ स्रोतों के बारे में पढ़ो और उनका संकलन करो ।

१. तीन-चार वाक्यों में उत्तर लिखो :

(क) 'भाषा' का क्या अर्थ है, इसके कारण क्या हुआ है ?

(ख) भाषा समृद्ध कैसे होती है ?

२. शब्दों के बारे में लेखक के विचार बताओ ।

३. भाषा समृद्धि के कारण लिखो ।

४. वाचन-संस्कृति बढ़ाने से होने वाले लाभ लिखो ।

L4BJLF

भाषा की ओर

नीचे दिए गए वाक्य पढ़ो और उपयुक्त शब्द उचित जगह पर लिखो :